दैनिक भास्कर भोपाल
29 JUL 2015

• स्मृति शेष | शिवराज सिंह चौहान

युवाओं के लिए ऊर्जावान उपस्थिति थे डॉ. कलाम

डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम क्या थे? यह कहने से ज्यादा यह कहना उपयुक्त होगा कि वह क्या नहीं थे! भारतीय जीवन मूल्यों के मूर्तिमंत स्वरूप डॉ. कलाम एक ज्योतिर्मय प्रज्ञा-पुरुष थे। महान लोग उन लोगों के प्रति सदा कृतज्ञ रहते हैं, जिनसे उन्होंने कुछ सीखा हो। डॉ. कलाम हमेशा अपने प्राथमिक शिक्षक शिव सुब्रमण्यम और वैज्ञानिक गुरु प्रो. सतीश धवन को याद करना कभी नहीं भूलते थे। वे देश के युवाओं के लिए एक ऊर्जावान उपस्थिति थे।

भारत को 2020 तक एक पूर्ण विकसित राष्ट्र बनाने का उन्होंने न केवल सपना देखा था, बल्कि उसे साकार करने की ठोस रूपरेखा भी सामने रखी। उन्होंने भारत को परमाणु शक्ति सम्पन्न बनाया। डीआरडीओ तथा इसरो जैसे उत्कृष्ट वैज्ञानिक संस्थान अपनी श्रेष्ठता के लिए उनके ऋणी रहेंगे। वे चाहते थे कि भारत के गांवों में शहरों जैसी सुविधाएँ उपलब्ध हों। अपनी इस योजना को उन्होंने प्रॉविज़न ऑफ अर्बन फेसिलिटीज इन रुरल एरियाज (पुरा) नाम दिया। उनकी पुस्तकों ने देश के युवाओं में नए उत्साह और आत्मविश्वास का संचार किया।

हमारा सौभाग्य है कि मध्यप्रदेश की धरती पर डॉ. कलाम के कदम कई बार पड़े। यहां अपनी हर यात्रा में उन्होंने हमें विकास के लिए ठोस मार्गदर्शन देने के साथ ही नया जोश भी जगाया। संपूर्ण विकास के लिए उन्होंने हमें जो 11 बिन्दु सुझाए, उनसे हमें प्रदेश के लिए कुछ करने में काफी मदद मिली। मैं जब-जब कलाम साहब से मिला, उनकी सहजता और विनम्रता से मुझे उनके बड़ेपन का अहसास हुआ। पूर्व प्रधानमंत्री माननीय अटल बिहारी वाजपेयी के वह गहरे मित्र थे। वाजपेयीजी से उनकी केमिस्ट्री गजब की थी। अटलजी के प्रधानमंत्रित्व काल में डॉ. कलाम को भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से विभूषित किया गया। राष्ट्रपति के रूप में देश के सर्वोच्च संवैधानिक पद को उन्होंने सुशोभित किया।

(लेखक मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री हैं।)